

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

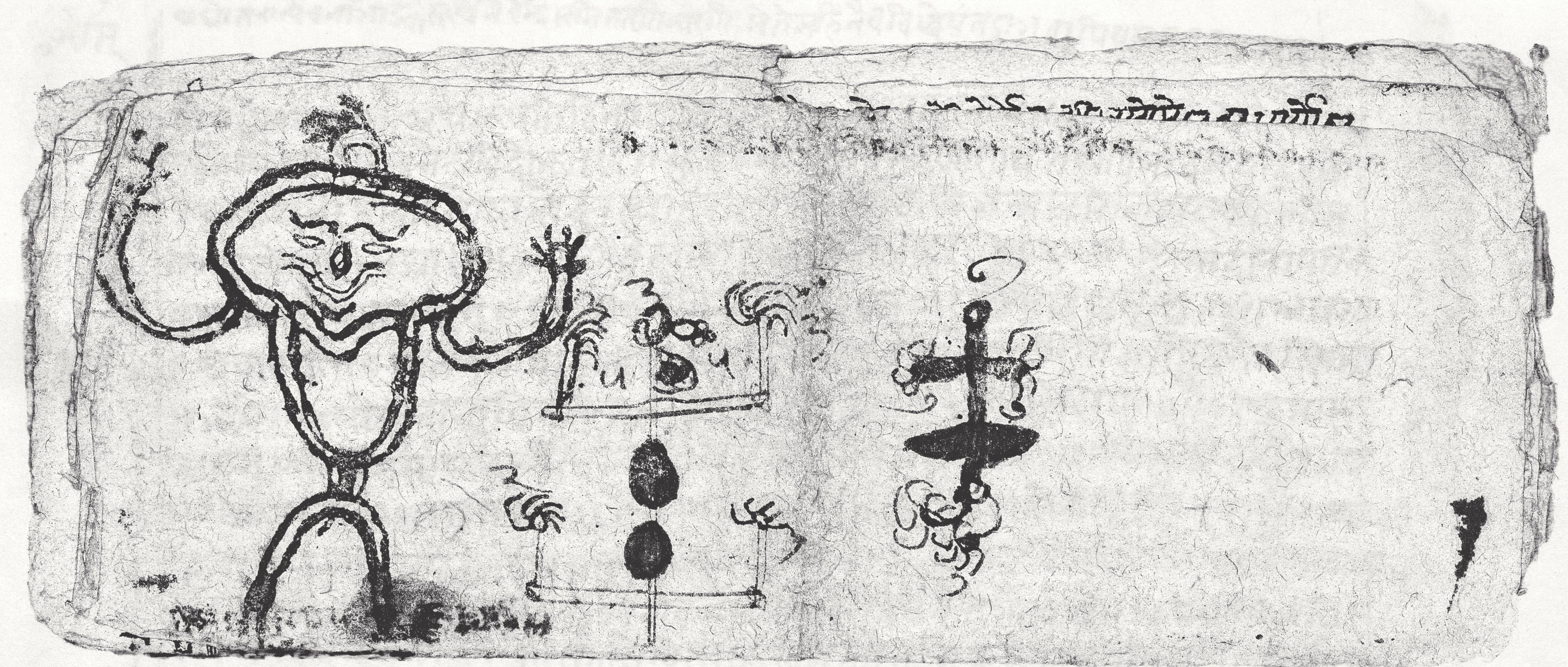
https://www.namani.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

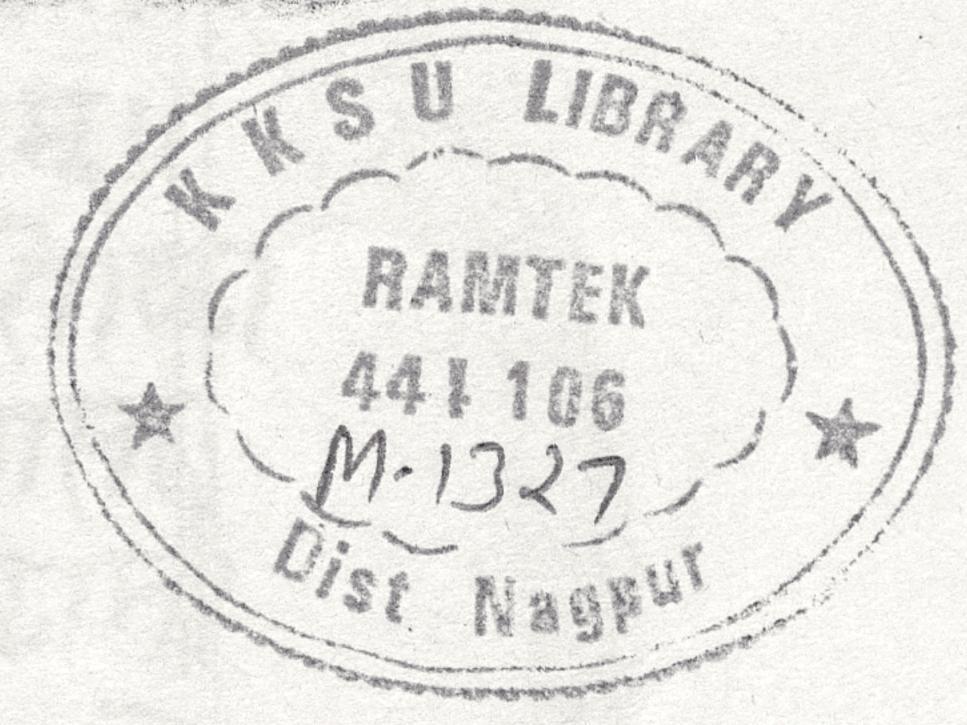
Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



Accession 1901- to 294 M1327.

Title! ~ 2441 Paria.





अद्योत्रनात्वयनाञ्चाद्वीस्थिनेयाद्द्वमामतायीत्रामाणीः मेत्रमहिनेदिविद्यम् तडाग्याप्यव्यवतन्त्रम् सूर्

श्राश्यायमाः श्रयास्त्विति दिन्यातः। नार्वानं वति सवर्गियो पतं करेर यानेक मिलामित्ते स्वादित्ते स्वादेव स्वाद

दिशायित्व स्टी घटिके ने ब्रान्स के स्पूर्ण प्रेम्प । श्रा कुला में वेदे ते धरा वराग सरावार । धर्म पार्थ (गामं । में ते वेदे त

अववने में नाता विषा पुरेणमाना धानका दिनियो स्टूरेन वित्त में है ने नियमित स्वापित त्या प्रीतिय शमेरी नायः दिनकन वद्यान गोग-त्रपुरुपपुन में वश्रीविनिया मान मन्य प्रवास में ने प्रवास ने

विश्व नियाना निवर्ध देता । विश्व मंत्रारा पिन वासामिन क्षेत्र ने कारपेन रा चर्च क्षेत्र स्त्र मान कि क्षेत्र मानि के स्त्र क्षेत्र के स्त्र के स्त न्या भारतमेण सार हारोमेन्त्रम्याने ॥ एशान्यारे वित्रानये भागते जी निहासनम्। भ्रयम्य राज ने भेतरपाथा इक्षा को समित्र मा था था था था । भ्रमा भ्रमा भ्रमा प्राप्त हो स्वामीन भयः विरोज्य ज न भाग्त सेता अमेता वनदाया क्रमदाहमा वासार वास्त्रा ता क्रम प्रकार में विशे केष्णादिशोदि वर सवापाविसमान्त्रशामानित्यागाम क्रिनोक्षेन प्रताभयस्य स र्ये से विशान के कि तन्ती ता पति ति ता ती भगारत्य भागे साम ने कि शिक्षणाम शंकि हो ती ते सत्ते स म् श्री भिर्वयः म्या हाहायमन्वयमा। । यात्यात्यात् । अध्यादः व्याउश्वामाति।। अद्यात्यात्रः। क हिंगोर्समा असा हिता यो वित्र ते यह नाम ध्रया दिका मशोब थे।।। को अवत या त्या नाय व य य नमने वित्रत भा ना तमना ना ना ना माना भागा वित्र दे भा वा विद्या कर ने विवस्त दे ने व वित्र, नापंत्र ११ वह ११ भागत्व स्थातिष्य विष्य विष्यान्या द्रशान्य है यो तेश्व तेशा २० । उत्पत्रका अ है। त्यारिए रहा निर्देश हो। त्यान मधामधामधामधामधामधा । या विताला तरियां । यो भावति तन्त्र हिस्सा । वर्षे मात्र वर्षे मात् भेते को सम्बन्धित निवार का गाम हम या प्रवास संयोग प्रमित्त स्था के जो विक्ता कर वेस्त प्रयोश साथ जे के कि हा कि हो सम्प्रयेश कर के कि जो कि का कि का

नंशामानित्रम् ॥ एशोषानीत्। सायग्रासिन्ते शानीन्त्रित्तानात् प्रशासिम् स्थाता गशिग्रहींगांमाम्याननं मंन्दीरं प्राज्ययार्ड्यनियो भ्यमित युद्याराहणमाण ाचकित्रिकात्राभगेरासाक्त्रस्य प्राप्तास्य तीरिकात्रस्य यास्य प्राप्तिक इदं मंचं घटा न तर हिस्सिया। भणते मिलिरीए क्वान स्यामिम विधाने हो। भय २ शिवित वार ।। ऐन्द्र सिरी भाइपय दिमानिया नियानिया नियानिया निया नियानिया। क्षाम् वित्यवित्र मार्गान्पेष्ठ त्र यं ते। ज्ञान्य त्र । अस्याधा। यदा वामणाविता पुर्वादिशिताशितनदापश्चिमप्रस्थाताप्रसम्प्रसम्बन्धान्य । अधिवातिवारा शियः विशान्सात्विपत्न्यात्वं ते न्यु के तयसा किविद्या प कर विते ते छ भक्षाया तिः स्यामयुन्मविधनाति। वान्ति। ॥ १८॥ द्वाद्वभागं नयुनिनाति । विधाना अद्य न था। मध्येनाभित्वं मिन यानिह निष्याह व एश्वासी भ्रम्य यानि । गिनिहिं। निर्दे न्यपारितान्यस्तः समाहितान्यस्तिन्तान्त्रायाः उद्ययः जिति। स्तिवापित्रिः कात्रापित मा सानियद्वानपमावन शिव्हित्वा। ३०॥ अनिमिन्म तिन्तं भी नेनिवनं वारिस मिना को मिन्ह गारी साम शिवारिक में रिकारी कामा वामी वामा वामें असिता में

ेत्रान विशासायां महत्र मनायां प्रधान यया म्यान नित्र येवे नीय है ये मामहेश शर्भ गामसालिश्व सम्येवव सर्वे पन्त्रां महिन्दी किया मन्म या प्रमीन मक्ता मी मामली भरमास्या आष्टत्यके शक्षण (नद्रमा माश्रोत वर्षाद्र वाषानि (नाव बिखत्र ।) अभावति भवति शक्षण के नं वाति सिम्बद्र निष्ण नचे। धने प्रनासक्षण ११३२॥ १९८-ने विस्तारी स मध्यदी मिर्ययति मिता द्रायति स्मितं भे अभिवासि मिति पृथा ति -सिंद्तं श्रयते अध्या सम प्रभाग निर्मा हो से निर्मा । १३ ११ श्रेषशस्त्र महान म्।। १ र श्रीता प्रमाने त्रिया विश्व स्था है । इ अल्डि छ नाधा बाटिक हो भवे ती ठ्यानशाम्य ॥ ३४॥ अंश्वन्स य रिणाणादेन वश्र भिवपत्रेर इति हम्। चायिमाक्यावकीतिनिवदिनम्। ३५१। श्वनप्रतपताकारणादशां विशि न यहार्यय त्र तिवसताव ता ब्लेश शात वयन्त हो भवा मर वयन विकास व ने मतव विकास के भवा मर वयन है। भवा मरा व्यापन के मतिव विकास के स्वापन के श्री हानी ध नधाया मामोचेशायमा सम ज प नामा। नेप के नामाशा प्रम ने न न न हा जि श्रेश लादः शान्यभाषणय्वस्था अरे।। नमन्ताति छिन्द् तिनमान्त्वाति विनद्वात्रविन क्षेत्रं अन्वित्व वर्जा गरहानं भोदि तं व्यवशानियान यदेश मध्यवेश देवित कारा ४१।। सं भर्षि व्ययेशके स्रोतिवरं नयो यो गुनी। सम्ने भरती ते वे नाम्पो ति ने ने देवि वे वामा। धरा। वश्वात का तन्त्र राषावृद्या प्रश्नाते । स्यु तथित सद्ये हेव्से सहित्रात्व श्यापन्न प्रदेशका विद्यापर सामने एक सम्बद्धि सम्पादि । सम्पादि । सम्बद्धि । स

यति। किएम अभि होद्र हिन्द्र सम्प्रतित्र न स्टिन य न मसस्ति य न समस्ति य स्टिन य न समस्ति य हो या दा हो या हो या

क्षित्रका वंधे तथा सानित। गत्यो वेसा अगरमधिर्म संक्षयया साई विशास साने अध्या शियो विश्व सि हदया निद्या नियेष वेदश्री। धरा है । अति की मन्द गनन्दी तम निया वनाम्बर्धिवरिवने अपितिवनिद्याय मध्यक्षणाम्। हेर्यः अधिक्षत्र न्याः विश्वास्त्र देशा कायु के यो मह इयम मिन्त ने।। देशा कारिया निया निया निया के निया अधिकारित में क्षित्रकारानयकागारिके स्थानात्व के तरका हिनिया स्थानक निया जनासाम या ना देश । देश दराइ स्वाल भवा वाक्तीन वका स्थास्त मिनी सदाम् । वा स्तम (गा अं तरा कि स्थास न ने गरंभियन निर्मा के प्रशास्त्र प्रपान में में प्रमाणिक के उने में प्राप्त के निर्मा क यानिक भाषाम्। म त्यां माना । त्यां माना । त्यां माना भागां। हायुक्त साय मे। यन्त्र संयाय में वर्षित्रमा महापालमाने । वर्नत्वित्राच्या । वर्गत्वित्राच्या । वर्गत्वित्राच्या । इर्नेध्रहित्यातपुर्ध्वातपुर्धानिताग्रात्तिगार्तिगाग्रात्वोष्ट्रकतियाभित्रन्ति। रे भी से सम न ने।। श्रम ब्रम्भ स्थ का नंस श्राथण प्रमण तथा ति जी ने जी की मार का ति स्थारा है ने ने जम्। जा माणान्सेक गिमिक छू १६ जान्य ने हैं। को है की । । जिन्य के हिन्द के विन्ता है हैं। न्यश्रेति।। एथ हानप्रविद्यातिनी प्रियाप्रमायिक्यनिन्या या आ जेवाची निमा हन्ता मधसमाप्तम ११८१। हा नीस्यान्त साविताः तानन-गने व्यागक्यान छ। हा गिष्ठान स्पाई निरम्प्रशास्त्र प्रभारम् स्थानियां स्थान्य । यह स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य येपादभ्यमहान्यरावम् व्यवस्थानम् अन्यविष्यः । न्ययन्त ना मेन्यभिव्य ति उत्यापि विधानि महत्त्र अन्ति कार्याचा ति विधानि क्षित्र कार्याचा ति विधानि कार्या कार्या

भाष्यभाषाक्रोत्रोद्धाः स्वातित्रवर्त्तानिविधीक्षिणमाह्त्यस्पित्रव्यवायनिपित्वस्वतेष्ठा ।।।।। श्राप्ता भारति यद्या स्वयं देह वास्त्रामित स्तिमा प्रतिमानि वासी विवास स्वयं स्वयं स्वयं सम्बादित । माधारमाने बुशास्प्राप्याने महत्तः मेथेन प्रश्रामानियाने वा करने ना द्रयम्।।।।।।।। विमाशास्त्रणातिहेत्। नायानणभोकितः प्रक्षिप्रयुद्धान्ताक्षभेनोनभयं प्रकृतिन्त्र। य न इसोमधिनेक् प्योद्धान्यम् पंपनस्य १ १४॥ ३५ तु १४ ने ने इयो ने उनु १४ ने निस्ति ने स्वार्थ अधिनित्रवेशक्षेत्रवस्यान्मधिक्रवयाभाषाश्चात्राम् नागवनी केतः ३३ व्यक्तनाम्बर्धात्रास्य भाषामान विश्व विश्व के विश्व क की । हर्ना दिन के के सम्बद्धा के अवस्था है। इन्यान स्वता । इन्यान स्वता । इन्यान स्वता । इन्यान स्वता । इन्यान नारितिम ब्रामानितारितं ह्याश्चित्वाश्चित्वाशासित्यः सहस्रान्यानिति। प्रोगार्था व्यक्तिप्रतियोत्तस्य नाप्ति वशामणियशस्त्र स्तर्भागार्थः स्तर्भागार्थः स्तर्भागा अवारधो।। यथानाने न पानिन का नाणा न युरानधा।। वाष्णुः न र्वा भाषा परि श्रमधिमपर। २२११ च्याचित्रधारणाम्। इस्तानि नादितीस्वातिरवानपाश्रवणान्ये स्विते । १नभ्ने ज्ञानोनिवन धार्षन्यर न्योगाय ३११ च्याचानाः अत्र सः। भ्यानाः अत्र सः। लिस्रापाधितव्या वातु तो खता। न्यके के तेख विते समान्या हिए न्य महात है । । १४०। १५ दिन श्री स्त्रान चात्म जरा मादना द्वन वृशा वि ए विते स्प्राति वितो गरेका के का मान्य परिशास । १५०० व्या प्राति वितो स्प्राति वितो स्प्राति वितो स्वाति वितो स्वाति वितो स्वाति वित्राति वित्र वि इसेकिन्यायि-मन्तितिशो। शरभा वार्यश्रीनेश्च-गत्तश्रीशाणांवाने-उदार्नेशसभाशीवेशम निश्रतिका अरुविधि ने मं करिक तिति अपन्त्रश्रति असना नम् ॥ १॥ ध्रानिका नर्।। म्भादाष्ठव्यपुर्णादेश्हः महानियाचित्रावित्रा

CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

,CREATED=20.10.20 12:52 TRANSFERRED=2020/10/20 at 12:53:39 ,PAGES=8 ,TYPE=STD ,NAME=S0004222 Book Name=M-1327-BHUPATI VINOD ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF

[OrderDescription]